IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उषा चौधरीक कथाक विश्लेषण

HARERAM PANDIT

Dr. USHA CHOUDHARY

कथाक प्रारम्भ कहिया भेल, ई कहब कठिन अछि मुदा कथा कहबाक आओर सुनबाक प्रवृति मनुष्यमे प्रारम्भसँ अछि। कथा आ खिस्साक अर्थ होइत अछि ''कहब'' अर्थात जे किछु कहल जाय सैह कथा होइत अछि। एहि आधारपर कहल जा सकैछ जे मनुष्य जहियाँ बाजनहि सिखलनि ताहियेसँ कथाक प्रारम्भ भेल। संसारक समस्त प्राचीन साहित्यमे कथाक रूप भेटैत अछि। मनुष्यक उत्सुकता आ कौतूहलसँ कथाक प्रारम्भ मानल जाइत अछि।

मैथिली साहित्यमे एहि विद्याक रचना 20म शताब्दीक प्रारंभसँ भेल। एहिसँ पूर्व मैथिलीमे कथा लिखबाक परिपाटी नहि छल, एहि प्रसंग प्रख्यात आलोचक प्रो० रमानाथ झाक कथन छनि– ''कथाक एतय कहबाक वस्तु बूझल जाइत रहल, लिखबाक नहि ओ हमर तँ अनुमान अछि जे एहि रूपे कथाकार लोकनि संग मैथिलीक सहस्त्रा कथा लुप्त भए गेल।''[1]

मैथिली साहित्यमे आधुनिक कालमे कथाक रूपमे सभँ पहिने चंदा झा–'पुरूष परीक्षा'क अनुवाद रूपमे लिखनि मुदा पहिल मौलिक कथा अछि जनार्दन झा जनसीदनक 'ताराक वैधव्य' जकरा मिथिला मिहिर मे 1914 ई० मे प्रकाशित कएल गेल। एकर पश्चात् मैथिली साहित्य मे स्वतंत्रता सँ पूर्व कथाक गति बड्ड शुष्क छल। एकर विषय वस्तु मूलतः समस्या मूलक होइत छल जेना नारी समस्या, बाल विवाह, बेमेल विवाह, बहुविवाह, आदि मुदा ई कथा मूलतः उच्च वर्गक लोक सँ जुड़ल छल, तँ एहि प्रकारक कथामे जनचेतनाक अभाव छल आ एहि कथाक कथ्य एवं शिल्प दुनू कमजोर छल। एहि कालक प्रमुख कथाकार अछि बैधनाथ मिश्र, विद्यासिंधु, काली कुमार दास, रास बिहारी लाल दास, कुमार गंगानंद सिह, श्री बल्लभ झा, पं. श्यामनंद झा, श्याम सुन्दर झा मधुप, हरिनंदन ठाकुर सरोज आदि।

एहिकालमे अबैत अछि –

डॉ० उषा चौधरी मैथिली साहित्य लब्धप्रतिष्ठ कथाकार, यात्रा संस्मरण, समीक्षक, निबंधकार छथि। हुनक दू गोट कथा–संग्रह मैथिलीमे उपलब्ध अछि जे क्रमश : 'त्रयोदशी' (2006) आ 'स्वीकार' (2019), हिनक पहिल कथाक पोथी 'त्रयोदशी' जाहिमे कुल 13 गोट कथा संग्रहित अछि आ दोसर कथाक पोथी 'स्वीकार' जाहिमे कुल 24 गोट कथा संग्रहित अछि। हिनक समीक्षात्मक निबंध 'आधुनिक मैथिली साहित्य : एक विवेचन'(2014) जाहिमे हिनक 17 गोट निबंध अछि। हिनक यात्रा संस्मरण 'संयुक्त राज्य अमेरिकाक भूमि पर'(2016) जाहिमे हिनक 3 गोट संस्मरण अछि। हिनक शोध समीक्षात्मक पोथी 'आधुनिक मैथिली साहित्यमे महिला लेखिकाक योगदान'(2007) जाहिमे हिनक 7 समीक्षात्मक अध्यायमे उपलब्ध अछि।

जीवनक नव–नव अनुभवक पाठशाला कहल जाइत अछि तँ साहित्यकेँ ओहि पाठशालाक अचार्य कहल जयबामे कोनो असौकर्य निह कहल जयबाक चाही। डॉ० उषा चौधरी महाविद्यालयक सह–प्राचार्य पदकेँ सुशोभित कऽ चुकल छथि। प्राचार्यक धर्म होइत अछि आदर्शक आंगुर पकड़ि यथार्थक दर्शन करायब। प्रस्तुत कथा–संग्रह 'त्रयोदशी' माध्यमे लेखिका भग्न होइत मानवीय संवेदना ओ आत्मकेन्द्रकेँ केन्द्रीय भाव बना जीवनक विभिन्न आयामके छुबाक सफल प्रयास कयलनि।

डॉ० उषा चौधरी कथाकेँ कथाकार परिवेशत अनुमान उपज मानैत छथि। हुनक जन्म ग्रामीण परिवेशमे भेल छनि, मुदा अध्ययन अध्यापनसँ ल'क' महाविद्यालयमे प्राध्यापिका होयवाक कारणेँ हुनक परिचितक परिधिमे शिक्षित माध्यम वर्गमे रहल अछि। इएह शिक्षित माध्यम वर्गमे संवेदना ह्रास आ आत्मकेन्द्रित हुनक कथा सभक विषय वस्तु सेहो बनल अछि। संभवतः इएह कारण अछि जे हुनक कतेको कथाक संवादमे अंग्रेजी भाषाक प्रयोग भेल अछि। हुनक भाषा मिथिलाक गामक ठेठ मैथिली अछि।

उदाहरणस्वरूप 'त्रयोदशदी' कथा–संग्रहक कथा 'व्यथा'क एहि वाक्यकेँ लेल जा सकैछ– ''जखन दू वर्ष बीति गेल प्रवीणकेँ गाम अयलाह तँ कारजबाली के तार अयलै जे बड़ बेमार छी, जल्दी आबह।''[2] एहि वाक्यमे कारजबाली वेदना देखल जा सकैछ– रातिक बारह बजे जखन गाम पहूँचल तँ कारजबाली बिछावन पर पड़ल करौट फेरैट रहए संगमे एकटा जनानी देखी पूछलकै जे ई के अछि, तँ–ई तोरे सेवा लेल खबासिन के लएल छी, बेमार छह ने। कारजबाली जोरजोर सँ चिचिया कऽ अपन आखिसँ लोर खसबै लागल। बूझए मे भाँगठ नहि नहि रहलै जे ई जनानी कैं अछि जखन तँ ओ एतबे बाजए जे हमरा सौतिन साल भ गेल हौ दैब। भोर तक लोक सभ ओकरा कलपति सुनलक। तेकर बाद ओ निः शब्द भऽ गेल मुँह झाँपि कऽ पड़ि रहल एतबे नहि, प्रबीण ओकरा लग ओकरा छूबए जाइत एक लात मारि वेदना अलापति अछि। कुल मिलाकेँ लेखिकाक अपन एकटा

व्यक्तिगत भाषा–शैली अछि जकर प्रयोग ओ प्रांजल दंगसँ करैत अछि ओ से करैत कखनहुँ मैथिलीक स्वभाविकतासँ समझौता नहि करैत छथि।

'तड़प' कथ्यक ई उदाहरण द्रष्टव्य अछि–''ओ अपने डॉ० छथि हुनका बूझल छनि जे डॉ० सभकेँ राति–विराति कखनो रोगीक देखए पड़ि जाइत छैक तँ एकता जॉर्ललिस्टकेँ अगर राति–विराति अपन काज सँ बाहर जाए तड़तैक तँ की हर्जा छैक?''[3] एहि वाक्यमे माँ तऽ हमर बेचारी बनि गेल अछि। हमर पक्ष अपन ममता, प्यार, दुलार कारणेँ लैत अछि। मुदा ओ पापाक तर्क सँ पूर्णरूपेण सहमते अछि। हुनका ई लोभ होइ छैजे डॉक्टर पुतोह हएत तँ हमर सेबा, सतकार, उपकार सभ बारी–बारी कऽ देत। आ ई त ने हमर कहियो सेवा, सतकार नहिए हमरा सभ लग अयबो ने करत। दोसर एक बात जे किछ मिलवाक अछि सेहो किछु हमरा सभकेँ देबो ने करत। तेसर जे लभ मैरेज कएने छोटका धीआ–पुताक विवाहमे सेहो दिक्कत हएत। अंतः सलाह इएह जे अहाँ सभ कोनो ज्योतिष पर विश्वास नहि करू दुनियाक कोनो ज्योतिष पर विश्वास नहि करू दुनियाक कोनो ज्योतिष एहन नहि भेलाह जे सभ किछु सत्य बाजय चाहे गणना कतबो ठीक दंग सँ भेल होइ ओकर पच्चीस प्रतिशत बात नहिएटा मिलैत छैक। दोसर एहिबात सभमे ई सहि छैकजे अहाँ तँ भावना मे सेहो बहकि सकै छी मुदा अहाँक अभिभावक अवश्ये अहाँक बढ़िया दंगसँ सोचैत हएता। मुदा अपन नैतिकता जे कएह सएह करू। अनैतिक कखनो नहि बनी।

कुल मिलाकेँ लेखिकाक अपन एकटा व्यक्तिगत भाषा–शैली अछि जकर प्रयोग ओ प्रांजल दंगसँ करैत छथि। ओ से छथि । कथानक मजबूतीसँ अपन प्रभाव तखनहि छोड़ि सकैत अछि जखन कथा कहबाक लूरि होअए। डॉ. चौधरीकेँ कहबाक बेस लूरि छनि ताहिमे संदेह नहि। देश–काल, परिवेश, चरित्र आदिक निर्माण करैत लेखिका–कतहुँ असहज अनुभव नहि करैत छथि। कथा बनाबट एक रेखीय आ सरल होइत अछि कोनो तरहक शैल्पिक जटिलतासँ ओ कथाकेँ दूर रखैत छथि। 'त्रियोदशी' प्रत्येक कथा अपन आरंभ, विकास, अवरोह, चरमक निर्माण करैत पाठकीय कौतुहलतकेँ रखबामे सक्षम नजरि आबैत अछि। जेना पूर्वहिमे कहल गेल अछि हिनक कथाक भाव–पक्ष मुदा एहिसँ कथाक भाव्यत्मकताकपर कोनो प्रभाव नहि पड़ैत अछि। प्रत्येक कथा अपन फराक बनाबटक संग प्रस्तुत कयल गेल अछि मुदा एकटा विशिष्ट शैलिक संग जे हुनक अपन शैली थिक, अपन दंग थिक।

शैलीक स्तरपर 'त्रयोदशी'क कथा फराक–फराक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। मूलतः डायरी शैली आदिये प्रस्तुत कथा सभ अपन सोद्देश्यता धरि पहुँचायबामे सक्षम भेल अछि। विविध शैलीक कलात्मक प्रयोगक परिवेश आ पात्रक सजीव चित्रणक रेखा बेस सुस्पष्ट प्रतीत होइत अछि। आधुनिक कथा शैली ओ शिल्पगत क्रांतिक दौरमे कथाक शास्त्रीय परम्परकेँ जटिलताके बोझसँ बचबैत सरलरूप जगाकेँ रखबाक उधम रूपमे लेखिकाक सहारना कयल जयबाक चाही।

आब हम हिनक कथाक पोथि 'स्वीकार' शीर्षकसँ अपन बात रखऽ चाहब– ''जूनि पुछू मलकाइन, हमरा त' अनर्थ भऽ गेल। छौड़ी नबका साएँ लगसँ भागि गेलै से मनसा तकैत हमरा हीयाँ आयल अछि।''[4] एहि वाक्यके माध्यमे बेटी अगर सगाई तोड़ि दैतो तँ हमर चारू हजार रूपैया लाबै, की एकर ई समाधान अछि? ई थिक समस्या अजुक जे समाजमे गरीब लोक जे पाइ देलकै से तँ खा खेलियै। आब कोन उपाय करियै मनमे बुझलियै जे मलकाइन लग जाइछी, वएह कोनो समाधान लगा देथीन।

'स्वीकार' मे संग्रहीत कथा 'देहाती लोक' द्रष्टव्य थिक– ''जगदीशकेँ आ० एससी० मे जखन फस्ट डिवीजन भेटलनि तऽ सौसे गाम अनधोल भऽ गेल जे बिना टयूशन आ ने चारीए चपारी चललै तखनो फीरनाकेँ फस्ट डिवीजन भ गैलै।''[5] एहि कथ्यमे सभटा परिश्रमक फल छै। मुदा दादीक सेवाक, सतकार, आशीवार्द सदिखन छै। कीरनक माय महालक्ष्मी विश्वम्भरकेँ कहलनि फीरन मिस्ड कॉल कहलनि जे आब काल्हि भोरम फोन भैया करथुन। ओ पाताल लोक छै ने, एतय दिन छै तऽ ओतय राति । जेना कि एखन साझुक पहर छै। तऽ ओतय भोर भेल हेतै आ भैया ऑफिस जाइ वला हएथिन। ओतय सँ घुरती–काल तोरा फोन अवश्य करथुन। प्रातः भेने जखन विश्वम्भरक फोन अयलनि तऽ महालक्ष्मी हुनकासँ यैह निवेदन कयलनि। कोनो तरहेँ हमरा एहि बेटाकेँ अहाँ इंजीनियर बना दियौ। हम अहाँक आजीवन अभारी रहब आ इ एहसान सदिखन याद राखब। हमर बेटाकेँ अहाँ जखन जेनाकऽ जे कहबै करबा लेल, से करत। पढ़ि कऽ अहाँक ऋणो सधा देत। तैयो हम सभ प्राणी ऋणी रहब।

निष्कर्षतः उपरोक्त वर्णनक आधारपर कहल जा सकैछ 'त्रयोदशी' अपन कलात्मकताक माध्यमसँ पारम्परि भाषा, शिल्प–शैलीक जटिलताकेँ सरलतासँ प्रस्तुत भेल अछि। ओतहि, 'स्वीकार'मे सभ कथा समान धारा प्रवाहित कऽ रहल अछि आओर ई धारा थिक मनुष्यक जीवन राग।

संदर्भ :

1. पाठक, डॉ. अमरेश. कथा संग्रह : अजय प्रकाशन, पटना
2. चौधरी, डॉ. उषा. 2006. त्रयोदशी : उषा चौधरी (मैथिली विभाग) महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह मेमोरियल महाविद्यालय दरभंगा–846004, पृष्ट सं०–29
3. तत्रैव, पृष्ट सं०–45
4. चौधरी, डॉ. उषा. 2019. स्वीकार : सोनल प्रकाशन दरभंगा–846004, पृष्ट सं०–01
5. तत्रैव, पृष्ट सं०–19

नाम : हरेराम पंडित(शोधार्थी)

शोध पर्यवेक्षक : डॉ. उषा चौधरी :

पता : ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय कामेश्वरनगर दरभंगा, विश्वविद्यालय मैथिली विभाग–846008

मो० : 8102028444